शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजस्थान में पर्यटन के सांस्कृतिक संदर्भ

डॉ. नीतू परिहार
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

भारत में भ्रमण की विशेष परम्परा रही है। प्राचीनकाल में जब आवगम के साधन नहीं थे, तब भी यहाँ भ्रमण लोकप्रिय था। यहाँ के साधू, संतों, महात्माओं ने इस देश की संस्कृतिक एकता को मजबूत करने के लिए काफी प्रयास किये। प्राचीनकाल में तीर्थयात्रा का जीवन में महत्त्व था तो अब इसमें पर्यटन भी जुड़ गया है। राजस्थान पर्यटकों को प्रारंभ से ही आकर्षित करता रहा है। इसमें यहाँ की संस्कृति रची-बसी है, जो इसे भारत के अन्य पर्यटन केन्द्रों से अलग पहचान दिलाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान में पर्यटन के सांस्कृतिक सन्दर्भ पर विचार किया गया है।

भूमिका

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। यहाँ पर विभिन्न जाति और धर्म के लोग रहते हैं, जिनकी अपनी-अपनी संस्कृति व परंपरा है। इस देश की एक विशेषता भाषायी भिन्नता भी है। यहाँ की चारों दिशाओं में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। इन सभी की अपनी-अपनी परंपराएँ हैं, इतिहास है तथा विभिन्न ललित कलाएँ हैं। मात्र इतिहास, संस्कृति, भूगोल, अर्थशास्त्र को पढ़ लेना ही काफी नहीं है, जब तक हम नए या अजनबी स्थान की ताजगी को अनुभव नहीं करेंगे, नए चेहरों की भावनाओं को पढ़ नहीं लेंगे, उनके रीति-रिवाजों को प्रत्यक्ष तौर पर समझ नहीं लेंगे तब तक हमारा पुस्तकीय ज्ञान व्यर्थ है।

पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी महत्वपूर्ण है। भारत में पर्यटन क्षेत्रों की बहुलता है जो भारत ही नहीं विदेशी नागरिकों को भी आकर्षित करती है। यहाँ स्थापत्य एवं ऐतिहासिक लोककला, लोकजीवन, प्रेम-सौंदर्य तथा संस्कृति के बहुत से स्थान हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। भारत में पर्यटन की अनन्त संभावनाएँ हैं। सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों स्तरों पर भी पर्यटन की संभावनाओं के अवसर खोजे जा रहे हैं। भारत में वन्यजीव पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन के विकास की सर्वाधिक संभावनाएँ हैं। वर्तमान में सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विकास-विस्तार को भी महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। पर्यटक स्थलों पर विभिन्न देशों, राज्यों और अंचलों के पर्यटक आपस में मेल-मिलाप करते हैं, जिससे वैचारिक आदान-प्रदान भातृत्व-भावना, राष्ट्र-प्रेम और अन्तर्राष्ट्रीय सौंहार्द को बल मिलता है।

वास्तविक रुप से देखा जाए तो भारत में अनेक रमणीय स्थल और ऐतिहासिक स्मारक हैं, जो

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

देश के प्राचीन इतिहास के सूचक हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में मंदिरों, मस्जिदों, चर्च, गुरुद्वारों और गैर धार्मिक इमारतों जैसे किले, महल, तालाब, कुएँ और सेतु देखे जा सकते हैं। यह अमूल्य धन है और निसंदेह अपने में पर्यटन की अपार संभावनाएँ समेटे हैं। राजस्थान को वीरों की मातृभूमि कहा जाता है। भारत का यह राज्य राजपूतों की आन, बान और शान का प्रतीक, साहस, ईमानदारी तथा संघर्ष की याद दिलाता है।

राजस्थान में पर्यटन

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान संपन्न राज्य है। ऐतिहासिक धरोहर, किले और हवेलियाँ, वीर गाथाएँ, उत्कृष्ट साहित्य, अद्भुत हस्तकला, लोक संस्कृति एवं लोक कलाएँ, नृत्य परंपराएँ, रेतीले मैदान, अरावली की पहाड़ियाँ, मेले त्योहार, चिटकले रंगों की वेशभूषाएँ सब कुछ राजस्थान के आकर्षण व इसकी संपनता को दर्शाता है। राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए जिस Tag Line का प्रयोग किया जाता है वह है 'रंगीलो राजस्थान'।3 यह Tag Line ही अपने-आप में एक आकर्षण, जिज्ञासा उत्पन्न करती है।

प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता कर्नल जेम्स टॉड ने अपने राजस्थान भ्रमण के दौरान जो कुछ राजस्थान के विभिन्न भागों में देखा था उसके आधार पर उन्होंने राजस्थान को अत्यधिक रसमय और अत्यंत मुग्ध करने वाला प्रदेश माना। इसका वर्णन उनकी पुस्तक 'ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया' में मिलता है।

यहाँ का पहनावा इतना रंग-बिरंगा है कि पर्यटक सहज ही उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं जैसे सावन में लहरिया, फागुन में फागनिया, पहना जाता है। होली के आस-पास पीलिया भी पहना जाता है। राजस्थान के लेहरिए ने तो पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है। इस राज्य के चटक रंगों का प्रभाव भी गहरा है।

राजस्थान का खानपान भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। दाल-बाटी-चूरमा, बेसन-गट्टा, केर-सांगरी (पंचकूटा), लापसी, पापड़-दाना-मेथी का साग, साकलियाँ-पापड़ियाँ आदि ऐसे व्यंजन जो हमारी दृष्टि में आम है पर बाकी भारत के क्षेत्रों में और विश्व में यह बहुत प्रसिद्ध हैं। राज्य के विभिन्न त्यौहार उत्सव, मेले, गीत-संगीत, नृत्य, कला-कृतियाँ, लोक कथाएँ आदि बरबस ही देशी व विदेशी पर्यटकों को सदियों से अपनी तरफ आकर्षित करते रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। हर तरह के सैलानी यहाँ के रंगों, शिल्प, स्थापत्य कला, महलों, हवेलियाँ, धोरों, झीलों व जानवरों को देखने जरूर आता हैं।

बाड़मेर में मार्च में थार महोत्सव आयोजित किया जाता है। इस महोत्सव में लोकगीतों और लोक कलाकारों का अद्भुत संगम होता है। और अलगोजा की मधुर स्वर लहरियों में पर्यटक कुछ क्षण के लिए खो जाते हैं। इस प्रकार के महोत्सव में संगीत, नृत्य, शोभा-यात्राएं, ऊंट-दौड़ आदि का आयोजन स्थानीय जन के अलावा विदेशी पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता के अवदान से ओत-प्रोत है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर धार्मिक समन्वय एवं साम्प्रदायिक सदभाव का अनुपम आदर्ष प्रस्तुत करती है।

पर्यटन एवं पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षण के प्रयास

सन 1956 में स्थापित राजस्थान पर्यटन विभाग, विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राजस्थान के महत्वपूर्ण महलों, किलों, हवेलियों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित कर एक तरफ

उनका संरक्षण कर रहा है तथा दूसरी तरफ राज्य के लिए राजस्व जुटा रहा है। आमेर का महल राज्य का सर्वाधिक पर्यटन जुटाने वाला पर्यटन स्थल है। इनके अतिरिक्त हेरिटेज होटल का निर्माण, मेगा डेजर्ट सर्किट बनाना, रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स का प्रारंभ, कर राजस्थान विरासत के संरक्षण में अपनी अहम भूमिका प्रस्तुत कर रहा है। इसी संस्कृति की झलक यहाँ के लोकनृत्य में बखूबी दिखाई देती है। राजस्थान के लोकनृत्य रस्म भावभीनी एवं मनोहारी चेतना के वाहक है। ऋतु परिवर्तन हो या कोई त्योहार, पर्वोत्सव हो या कोई मांगलिक अवसर हो राजस्थानी लोकनृत्य यहाँ के जनजीवन का प्रमुख अंग है। यहाँ के लोकनृत्य न केवल देषी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है बल्कि विदेषी पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित करते है।

सन 1955 में स्थापित राज्य अभिलेखागार भी साहित्यिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य कर रहा है। इसका मुख्यालय बीकानेर में है। यह विरासत के महत्वपूर्ण लेख, फरमान, निशान, मंसूर, परवाना, रूक्का, बहियाँ, अर्जियों आदि के संरक्षण में लगा हुआ है।

जोधपुर में प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना की गई है जो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा पाली आदि भाषाओं में लिखे गए वेद, धर्म-शास्त्र, दर्शन, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, व्याकरण, तंत्र-मंत्र आदि की पाण्डुलिपियों के लेखन एवं संरक्षण का कार्य करता है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका है। पर्यटन को एक ऐसा उद्योग माना जाता है जिसमें किए गए विनियोग की तुलना में यह काफी रोजगार के साधन उपलब्ध कराता है। इससे विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है। यह माना जाता है कि प्रत्येक आठ विदेशी पर्यटकों पर राज्य में एक व्यक्ति को रोजगार मिलता है तथा प्रत्येक 32 स्वदेशी पर्यटकों को एक व्यक्ति के लिए रोजगार का अवसर खुलता है। जिससे सांस्कृतिक व कलात्मक धरोहर का संरक्षण व सदुपयोग होता है। राज्य में मार्च 1989 पर्यटन को उद्योग घोषित किया गया था। फिलहाल राजस्थान में जून 2015 में राजस्थान पर्यटन इकाई नीति जारी की गई है। आशा है कि नई नीति का आधार ढांचे के विकास, आमदनी व रोजगार सृजन, पर्यटकों के लिए सकारात्मक दिशा में प्रयास करेगी और अपने संकल्प शब्दों में- "केसरिया बालम आओ जी पधारो महारे देश" और 'धरती धोरा री' जैसी स्वर-लहरियाँ पर्यटन के क्षेत्र में राजस्थान को सदैव देश-विदेश में अग्रिम पंक्ति में सुसज्जित रखेगी।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत में पर्यटन के क्षेत्र में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। देशी और विदेशी पर्यटन के लिए अहम् भूमिका निभा रहा है। या यूं कहे कि कोई भी विदेशी पर्यटक भारत में घूमने आते हैं तो वह राजस्थान की संस्कृति को देखे बिना नहीं जाते।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. मंजु यादव, पर्यटन एवं विकास, अविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2002, पृष्ठ 12

2 डी.आर.आहूजा, राजस्थान : लोक संस्कृति और साहित्य, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, 2002, पृष्ठ 8

3 विनोद अग्रवाल, भारतीय पर्यटन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, 2002, पृष्ठ 46

4 डॉ. मंजु यादव, पर्यटन एवं विकास, अविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2002, पृष्ठ 23

5 वही, पृष्ठ 7

6 डॉ. हुकमचंद्र जैन, श्यामसुंदर शर्मा, राजस्थान इतिहास एवं संस्कृति कोष, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर, 2013, पृष्ठ 518